दिनांक :- 09-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

इकाई :- चतुर्थ

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन में पश्चिमी साम्राज्यवाद का प्रसार

1873 में पहली बार पीकिंग दरबार में विदेशी राजदूतों को सम्राट के समक्ष आमंत्रित किया गया। 1877 में प्रथम चीनी राजदूत लन्दन भेजा गया। 1878 से चीनी राजदूत राजदूत को प्रायः प्रत्येक यूरोपीय राजधानी में रहने लगे। 1878 में ही संयुक्त राज्य अमरीका में चीनी राजदूत को नियुक्त किया गया तथा 1880 में पेरू में चीनी दूतावास कायम हुआ। इस तरह 19वी शताब्दी के अंतिम तीस वर्ष में चीन

Scanned with CamScanner

पश्चिमी विचार धारा व राजनयिक प्रणाली से परिचित हो गया। राजकुमार कुंग ने यह अभूतपूर्व कदम इसलिए उठाया था कि इससे कुछ भ्रम दूर हो सकेगें और विदेशी सरकारो से घनिष्ठ सम्बंध स्थापित हो सकेगा।

(3) सेना – दो अफीम युद्धो में चीन की पराजय ने इसकी सैनिक कमजोरी को नग्न कर दिया। अतः सैनिक पुनर्गठन और नौसेना की स्थापना करने की ओर ध्यान दिया गया। इंगलैंड से युद्धपोत भी मगांए गए। 1866 में शंघाई में जहाज बनाने का पहला कारखाना खोला गया। जहां 1868 में पहला युद्धपोत बनाया गया। 1895 में फूचाऊ में भी इसी तरह का एक कारखाना खोला गया। सैनिक विद्यालय भी खोले गए। तिन्तसीन में गोला-बारूद बनाने के लिए कारखाना खोला गया। चीनी सेना के प्रशिक्षण के लिए जर्मन भेजा गया।

1881 में एक नौसैनिक स्कूल खोला गया। अंग्रेज अफसर डब्ल्यू० एम० लैंग की सहायता से पेइयांग जहाजी बेड़े की शुरुआत कीगई। 1888 तक इस बेड़े (Fleet) में पचीस जहाज शामिल हो गए जिनमें दो युद्धपोत भी थे। ये सारे कदम प्रान्तीय स्तर पर उठाये गये थे। केन्द्रीय सरकार ने इनमें कोई विशेष रुचि प्रदर्शित नहीं की थी। फलतः चीनी सेना में कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं आ। तलवार जैसे पुराने हथियारों से काम चलाते थे। दुर्भाग्यपूर्ण नहीं हुआ। 1894 में केवल साठ प्रतिशत चीनी सिपाहियों के पास ही बंदूकें थीं। शेष भाले, बरछे या तलवार जैसे पुराने हथियारों से काम चलाते थे। दुर्भाग्यपूर्ण बात तो यह थी कि कुछ परम्परावादी चीनियों ने सेना के पश्चिमीकरण का विरोध किया। सेना में रिश्वत का खुले आम प्रचार था। अधिकांश काम कागज पर ही होता था।

सैन्य सामग्री सैनिक हथियार सैनिक अनुशासन का अभाव था। यही कारण था कि 1894-95 के चीन-जापान युद्ध में चीन को पराजित होना पड़ा।

(4) औद्योगीकरण - विदेशी सम्पर्क धीरे-धीरे चीन के आर्थिक जीवन में भी परिलक्षित होने लगा। अनेक पूँजीपतियों ने कल-कारखाने खोलने में दिलचस्पी ली। मंचू सरकार ने भी इस ओर ध्यान दिया। फूचाऊ में एक जहाजी कारखाना खोला गया। इसके निर्माण के लिए फ्रांस से तकनीकी सहायता प्राप्त करने के लिए फ्रांसीसी अभियंताओं से सहायता ली गई।

1872 में चाइना मर्चेन्ट्स स्टीम नेविगेशन कम्पनी (China Merchants Steam Navigation) संगठित की गई। कम्पनी को कोयले की आपूर्ति के लिए काइपिंग कोयला खान में शुरू किया गया।

खाने से बन्दरगाह तक कोयला पहुचाने के लिए रेल-मार्ग बनाना अवश्यक हो गया। 1876 में शंघाई से वूसुंग तक रेलवे लाइन चालू हो गई। किन्तु अंधविश्वास ग्रस्त चीनियों ने रेल पटरियाँ उखाड़कर फारमोसा द्वीप में डाला गया। ताकि उन्हें पुनः चीन में वापस नहीं लाया जा सके। किंतु चिहली प्रांत के सम्बंध में वाइसराय लि-हुंग-चांग के प्रयत्नों के फल स्वरूप टोंग-शान रेलवे लाइन का निर्माण किया गया। इस से चीन औद्योगिक विकास में बड़ी मदद मिली। 1882 में तित्सीन से शंघाई तक तारलाइन बिछाकर संचार-संवहन को प्रोत्साहित किया गया। 1890 तक अनेक औद्योगिक विकास में बड़ी संस्थानों की योजनाएँ बनाई और कुछ स्थापित भी की गई। 1890 में हांग-यांग (Hang-Yang) लोहे के कारखाने की स्थापना की गई जो बाद में चीन का इस्पात का सबसे बड़ा कारखाना बन गया। सूती उद्योग को प्रोत्साहन किया गया।

Scanned with CamScanner

आटा तेल और नमक के उत्पादन का भी प्रबंध किया गया। ये सब धंधे और संस्थाएँ राजकीय निरीक्षण और व्यापारी संचालन के सिद्धान्त पर चलते थे। इस प्रणाली में व्यापारी पूँजी का अंश देते थे, लेकिन प्रबंधक या मैनेजर एक राजकीय पदाधिकारी होता था। व्यापार को भी प्रोत्साहित किया गया। 1865 में स्थापित हुंग कांग और शंघाई निगम आदि विदेशी बैंकों ने आर्थिक विकास में काफी दिलचस्पी लिया है। इस प्रकार ली हुंग-चांग और चांग-चीह तुंग (Changchi-Tung) की दूरदर्शिता के कारण चीन में औद्योगिकरण शुरू हुआ। 1863 और 1890 के बीच तक नौकी विद्यालय कल कारखाने, शस्त्रागार, जहाज बनाने के कारखाने आदि स्थापित किए गए। किंतु औद्योगीकरण की गति धीमी और प्रभाव कारी थी।

इस प्रकार उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है कि चीन पश्चिमी साम्राज्यवाद का शिकार तो बना, लेकिन साथ ही वह अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए भी प्रयत्नशील हो गया। इसने अपना सुदृढ़ीकरण इस उद्देश्य से भी कि वह पश्चिमी साम्राज्यवाद का विरोध कर सके। यह मध्ययुगीन परम्पराओं को तिलांजली देने को उद्यत हो गया। इसीलिए इसने शिक्षा, सेना, उद्योग-धंधों का विकास किया। यह पश्चिमी साम्राज्यवाद का प्रत्यक्ष परिणाम था।

शतदिवसीय सुधार (The Hundred Days' of Reform)

19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में चीन पश्चिमी साम्राज्यवाद के धमाके से जग उठा। उसे दो अफीम युद्ध में पराजय के मुंह देखने पड़े थे। देश में तैपिंग विद्रोह हो गया था। अतएव उसे संभालने के लिए पर्याप्त चेतावनी मिल गई थी। चीन में एक सुधारवादी दल का आविर्भाव हो गया।

Scanned with CamScanner